राजलदेसर परिषद्, बेंगलौर द्वारा सेवा कार्य

आचार्यश्री महाश्रमण के राजलदेसर मर्यादा महोत्सव के प्रवास काल के दौरान राजलदेसर परिषद्, बेंगलौर के द्वारा उल्लेखनीय सेवा कार्य किये गये। जिसमें आचार्य प्रवर के प्रवेश के उपलक्ष्य में उपस्थित पाँच हजार से अधिक की जन मेदिनी को अल्पाहार की व्यवस्था श्रीविमल बांठिया द्वारा की गई। इसी क्रम में शासनसेवी स्व. चम्पालाल नाहर परिवार के सौजन्य से कम्बल वितरण भी रखा गया। जिसमें अणुव्रत प्रभारी मुनिश्री सुखलालजी ने अपना सान्निध्य प्रदान किया और सभी को नशामुक्त रहने की प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम का संचालन सहमंत्री श्रीविक्रम दुगड़ ने किया। श्रीप्रेमप्रकाश हीरावत द्वारा साधु–साध्वियों के नेत्रों की जाँच करके उन्हें अपेक्षित फ्रेम चश्मा दिया गया। मर्यादा महोत्सव के उपलक्ष्य में श्रीमती मंजू–फतेहचन्द बेंगवानी के सौजन्य से 'युवादृष्टि' एवं 'तेरापंथ टाईम्स' के वार्षिक सदस्य 50 प्रतिशत की विशेष छूट पर बनाये गये। जिसमें उल्लेखनीय संख्या में सदस्य बनाए गए। अभूतपूर्व उत्साह के साथ ''अतिथि देवो भवः'' के अनुरूप आगन्तुक श्रावक–श्राविकाओं के लिए चाय, शर्बत, पानी आदि की निशुल्क व्यवस्था की गई। जिसकी सभी ने भूरी–भूरी प्रशंसा की। उल्लेखनीय है कि बेंगलौर परिषद्, राजलदेसर हर वर्ष बेंगलौर में चातुर्मासित चारित्र आत्माओं की साप्ताहिक मार्ग–सेवा एवं गाँव की सामूहिक सेवा–उपासना करता है। बेंगलौर में राजलदेसर के प्रवासी 70 परिवारों से श्रीगणेशमल नाहर, श्रीबालचन्द चिण्डालिया, श्रीललित नाहर, श्रीराजेन्द्र बैद, श्रीपंकज नाहटा, श्रीविमल बाँठिया, श्रीधीरज दुगड़, श्रीजितेन्द्र घोषल, श्रीफतेहचन्द बेगवानी, श्रीमोहनलाल बैद, श्रीमंगतमल दुगड़ आदि ने प्रवास काल के दौरान पूर्ण रूप से व्यवस्थाओं में दिन–रात सहयोग किया और चारित्र आत्माओं की सेवा उपासना का लाभ लिया। यह जानकारी परिषद् के सहमंत्री विक्रम दुगड़ ने दी।

आचार्य परम्परा की

मर्यादा और अनुशासन का अनूठा महापर्व – मर्यादा महोत्सव

26 जनवरी का दिन भारतीय गणतंत्र में और माघ शुक्ल सप्तमी का दिन तेरापंथ धर्म संघ में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। भारतीय गणतंत्र ने 26 जनवरी के दिन अपने संविधान को लागू किया था। उस दिन को राष्ट्रपर्व के रूप में मनाना शुरू किया। इसी तरह तेरापंथ धर्म संघ (जैन) ने माघ शुक्ल सप्तमी को संविधान लागू किया, जिसे मर्यादा कहा गया और मर्यादा महोत्सव के रूप में मनाना शुरू किया। जहां भारतीय गणतंत्र तिरंगे की छत्र–छाया के नीचे संगठित होकर खड़ा होता है वहीं तेरापंथ धर्म संघ में एक आचार्य की आज्ञा ही सर्वोपरी है। तेरापंथ धर्म संघ एक ऐसा संगठन है, जो अपने संविधान की पूर्ति के उपलक्ष्य में शताब्दी से भी अधिक समय से ऐसा पर्व मनाता आया है। इस बार राजलदेसर में आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में 147वां मर्यादा महोत्सव आयोजित हुआ। मर्यादा से रेल–पेल, अनुशासन से ओत–प्रोत है मर्यादा महोत्सव। इसमें अतीत की शुद्धि, वर्तमान की भारहीनता और भविष्य के लिए नई पुष्टि मिल जाती है।

राष्ट्र के वर्तमान वातावरण के परिप्रेक्ष्य में मर्यादा महोत्सव जैसे पर्व की बात निश्चय ही एक अजीब और असामयिक प्रवृति लग सकती है परन्तु साथ ही यह उतनी ही आशाप्रद भी कही जा सकती है। जहां चारों और से मर्यादा भंग की ही घटनाएं सुनने को मिलती हों, राजनेताओं से लेकर विद्यार्थियों तक सभी तबकों के लोग जहां संगठन के स्थान पर विघटन में ही अपनी शक्ति लगा रहे हों और जहां जन–धन की सुरक्षा आशंकाओं के घेरे में पड़ी हों, वहां मर्यादा या कानून की याद दिलाने वाला यह पर्व मार्ग–दर्शन का कार्य कर सकता है। मर्यादा और अनुशासन की आज सबको आवश्यकता है। यह सत्य है।

सूरज चांद सितारों ने कब मर्यादा छोड़ी।
और समंदर धरती अंबर ने कब सीमा तोड़ी।

संगठन चाहे छोटा हो चाहे बड़ा, राजनीतिक हो चाहे धार्मिक, उसे सुव्यवस्थित चलाने के लिए अनुशासन की और अनुशासन के लिए नियमों की आवश्यकता होती है। उन्हीं नियमों को नियम या शासन शब्द की अपेक्षा मर्यादा कहना अधिक तर्कसंगत होता है। नियम शब्द से नियंता एवं नियंत्रित के तथा शासन शब्द से शासक और शासित के भावों की और ध्यान जाता है, साथ ही एक बाध्यता की सी स्थिति अनुभूत होने लगती है, परन्तु 'मर्यादा' शब्द से बाध्यता रहित केवल कर्तव्य और अकर्तव्य की सीमा का बोध होता है। मर्यादा जीवन को समृद्ध करने वाली होती है, कुंठित नहीं। कुण्ठा तब उत्पन्न होती है, जब मर्यादा लादी जाती है। मर्यादा के अन्तर्गत व्यक्तिगत स्वतंत्रता को बहुत मूल्यवान समझा गया है, उसमें किसी प्रकार की बाधा नहीं है। परन्तु निरंकुश छूट देकर प्रमाद को बढावा देना भी उचित नहीं होता।

अनुशासन हीनता के दुष्परिणाम हम देख रहे हैं। बंद, घेराव, हड़ताल, तोड़फोड़, हिंसा, आगजनी, असंसदियात्मक भाषा प्रयोग आदि घटनाओं के मूल में कौनसी वृति काम कर रही है? स्वयं अशासित व्यक्ति दूसरों पर अनुशासन करने का प्रयत्न कर रहा है, यह आज की सबसे बड़ी समस्या है। देश का बौद्धिक वर्ग, राजनेतृ वर्ग, सामाजिक वर्ग, समाज–सुधारक

क्रमश ... पेज 2 पर

वर्ग और धार्मिक वर्ग भी इस समस्या से आक्रांत है। इन सभी वर्गों में प्रमुख कहलाने वाले व्यक्तियों का आज कोई आदर्श नहीं रहा। वे अपने साथियों और अनुयायियों से जो काम कराना चाहते है, स्वयं उनके साथ नहीं जुड़ते। काम अधूरा रह जाता है और उनकी नीति असफल हो जाती है। अनुशासन जब हृदय की पवित्रता से पाला जाता है, तब वह व्यक्ति के चरित्र विकास का द्योतक है और जब दंड की नीति से पाला जाता है तब विवशता का। हृदय की पवित्रता व्यक्ति को आचरण की और प्रवृत करती है। पवित्रता के अभाव में दंड की नीति ही कार्य करवाती है, परन्तु वहां कार्य किया नहीं जाता करवाया जाता है। वह संगठन की अस्वस्थता का द्योतक है।

संघीय जीवन में व्यक्ति को अपनी निस्सीम स्वतंत्रता के कुछ अंशो का बलिदान करना होता है। अकेला व्यक्ति यथा रूचि रह सकता है, परन्तु समष्टि में रहने वाले को अपनी रूचि के कोणों को इस प्रकार से घिस लेना पड़ता है कि वे समष्टिगत किसी अन्य व्यक्ति के रूचि–कोणों से न टकरा पाएं। प्रत्येक संगठन पारस्परिकता के आधार पर खड़ा होता एवं पनपता है। संघ (संगठन) वहीं है, जिसमें आज्ञा, अनुशासन और मर्यादा है। जहां अनुशासन नहीं होता, वह संगठन अस्थियों का समूह मात्र रह जाता है। वह जीवंत, जागरूक और तेजस्वी संघ नहीं बन सकता। अनुशासन समूह के लिए जितना आवश्यक है, उससे भी अधिक आवश्यक है व्यक्ति के लिए। अनुशासन वह कला है, जो जीवन के प्रति आस्था जगाती है। अनुशासन वह आस्था है, जो व्यवस्था देती है। अनुशासन वह व्यवस्था है जो शक्तियों का नियोजन करती है। अनुशासन वह नियोजन है जो नया सृजन करता है। अनुशासन वह सृजन है जो आध्यात्मिक चेतना को जगाता है। अनुशासन वह चेतना है जो अस्तित्व का बोध कराती है और अनुशासन वह बोध है जो जीना सिखाता है। अनुशासन वह बुनियादी ईंट है, जिसके आधार पर जीवन का महल खड़ा होता है। अनुशासन वह बीज है जिसके आधार पर एक वृक्ष शतशाखी बनकर छाया देता है, फल देता है। अनुशासन वह बूंद है जिसके आधार पर जीवन–मर्यादा का समुद्र लहरा उठता है और अनुशासन वह किरण है जो जीवन की अंधियारी राह में आलोक बिछा देती है। व्यक्ति–व्यक्ति की अनुशासन–चेतना जागृत हो जाए तो समाज और राष्ट्र में शक्ति का प्रयोग करने की अपेक्षा ही न रहे।

संगठन है तो उसे बनाये रखने के लिए मर्यादाएं भी है। मर्यादा अर्थात अनुशासन। मर्यादा क्या है? एक व्यक्ति दुसरे व्यक्ति की, एक समाज, दुसरे समाज की एवं एक राष्ट्र दुसरे राष्ट्र की स्वतंत्रता न छीने इसी का नाम है मर्यादा। मर्यादा वह पतवार है जो नौका पार लगा देती है। मर्यादा वह ताकत है जो व्यक्ति को आकाशीय ऊंचाइयों तक पहुंचा देती है। सूर्य पूर्व दिशा में उदित होकर सांय पश्चिम दिशा में अस्त हो जाता है। समय के प्रबन्धन का नाम है मर्यादा। मर्यादा वह मशाल है जो जिंदगी को जगमगा देती है। मर्यादा वह उष्मा है जो शीतकाल की ठंडी बयार को सहन कर सके। मर्यादा संयममय जीवन जीने की जीवन शैली का नाम है। उच्छृंखलता पर अकुंश की लगाम है मर्यादा। अहं के बिखराव का नाम है मर्यादा। मर्यादाएं वे तत्व है जिससे आचरण व व्यवहार की सीमाओं को परिभाषित किया जाता है और

क्रमश ... पेज 3 पर

अनुशासन वह व्यवस्था है जो मर्यादा को लागू करती है। जीवन के विकास के लिए इन तथ्यों को आत्मसात करना अत्यावश्यक है। सचमुच विनय और अनुशासन जीवन के जागरूक प्रहरी है। जो अनुशासित नहीं होता वह साध्य या लक्ष्य के प्रति असंदिग्ध एवं निर्णीत गति नहीं कर पाता। जिस व्यक्ति में जितनी अनुशासन एवं विनय की भावना होती है, उसके अनुरूप ही उस व्यक्ति का व्यक्तित्व बन जाता है। अनुशासित होना संगठन के लिए जितना आवश्यक है, उससे भी कहीं अधिक वह अपनी प्रगति के लिए आवश्यक है जिन संगठनों में विनय एवं अनुशासन की पालना होती है, उन संगठनों के विकास की बात ही अलग होती है। मर्यादा और सहिष्णुता मर्यादा के सुरक्षा कवच है। गण (संगठन) की एकता और पवित्रता बनाए रखने के लिए कर्तव्य, अकर्तव्य, विधि–निषेध की सीमा ही मर्यादा है।

आज के युग में बढता स्वार्थ और अहं संगठनों में बिखराव का कारण बनता जा रहा है। व्यक्ति अपने स्वार्थ और अहं के कारण पद (कुर्सी) के मोह को नहीं छोड़ पाता। अपनी व्यक्तिगत सत्ता का सम्पूर्ण विसर्जन समाजवादी व्यवस्था की अनिवार्य शर्त है, जिसका श्रेष्ठतम रूप तेरापंथ धर्म संघ में मिलता है। यह एक तंत्र में प्रजातंत्र का निखरा एवं निथरा हुआ प्रारूप है, यहां जनतंत्र की आत्मा का हनन नहीं होता। सेवा के लिए यहां भरपूर स्थान है, सत्ता के लिए किंचित भी नहीं।

यह पर्व भारत वर्ष की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक भावनाओं का एक मूर्त प्रतीक है। समान आचार, समान विचार और समान चिंतन की भूमिका का निर्माण करने में इस पर्व ने बहुत बड़ा कार्य किया है। इसमें न्याय नीति, समता, संविभाग और समाजवाद की व्यवस्था को देखकर जय प्रकाश नारायण ने कहा था ''यहां तो सवा सोलह आना समाजवाद है। हम जो लाना चाहते है, वह यहां तो शताब्दियों पहले आ चुका है।''

इतिहास साक्षी है कि सामाजिक स्तर पर ऐसी व्यवस्था कभी नहीं रही जिसमें जीवनोपयोगी सभी साधन सब को समान रूप से उपलब्ध हों और सबका पारस्परिक स्तर समान रहा हो, यद्यपि इस प्रकार की परिकल्पना तो अनेक बार होती रही है। अतीत के महान दार्शनिक प्लेटो ने समाजवादी व्यवस्था का प्रतिपादन करते हुए अपनी 'रिपब्लिकन' पुस्तक में ऐसे समाज की रूपरेखा प्रस्तुत की थी, लेकिन यह व्यवस्था अधिकार सम्पन्न वर्ग के लिए ही थी। उसमें दोसों के लिए शुद्रों जैसा ही स्थान व व्यवहार था। वे उस व्यवस्था से अछूते ही रहे। एक गुरू के आचार और एक विधान में संघ चले ऐसी व्यवस्था या संगठन की दृष्टि में इतना सुदृढ संविधान आचार्य भिक्षु की अलौकिक देन है। उन मर्यादाओं ने श्रमण–संघ को सामूहिक जीवन की दिशाएं तो दी ही, उस और बढने के लिए उपयुक्त वातावरण का भी निर्माण किया।

प्रेषकः– अशोक बैद 'बाडेला' (Ashok Baid)
पो. राजलदेसर (चूरू) राजस्थान